International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 592-593

हिंदी भाषा में विद्यार्थियों की पठन संबंधी अधिगम आवश्यकताएँ

डॉ० बी० एल० श्रीमाली[1], मधु कुमावत[2]
[1] सह–आचार्य (शिक्षा), जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत।
[2] पीएच.डी. शोधार्थी, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

भाषा मूलतः मनुष्य का एक संस्कार है। भाषा को हम पारिवारिक एवं सामाजिक पर्यावरण से सहज रूप से क्षमता एवं क्रिया द्वारा अर्जित करते हैं। परम्परा उसे पुष्ट तथा विकसित करती है और संस्कृति की सजगता से भाषा मुखर हो उठती है, इसलिए भाषा सिर्फ भाव संप्रेषण का मात्र स्थूल साधन न होकर किसी भी राष्ट्र की संस्कृति को युगों–युगों तक संजोए रखने में सक्षम भी होती है। भाषा के आविष्कार और विकास के साथ ही मानव सभ्यता और संस्कृति निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर रही है। भाषा वह प्रकाश है जिसने असभ्यता और अज्ञान के अंधकार को चीरकर सभ्यता और ज्ञान का पथ अवलोकित किया है।

भाषा का अर्थ एवं महत्व

बाबूराम सक्सेना के अनुसार– ''भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है और विचारों, अनुभवों और संदर्भों को व्यक्त करती है। इसके साथ उन्होंने यह भी कहा है कि जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय व्यक्त करता है उसकी समष्टि ही भाषा है।''

भाषा शब्द से ही यह ज्ञात हो जाता है कि इसका मूल रूप उच्चरित होता है। भाषाभिव्यक्ति संसार के सभी प्राणी अपने–अपने तरीकों से करते हैं। जब कोई बालक पठन करता है तो पठनीय वस्तु के रूप में उसके सामने कुछ चिह्न होते हैं। इन चिह्नों को पढ़ते ही वाचक के चेहरे के भाव बदल जाते हैं। यह प्रतिक्रिया उन चिह्नों को दिये गये अर्थ पर निर्भर करती है। इन प्रतीकों, चिह्नों, संकेतों के माध्यम से वह अपने भावों को दूसरों तक भली–भाँति पहुँचाने में समर्थ होता है। मनुष्य पठन कौशल के द्वारा ही इतिहास, कहानियाँ, लेख, नाटक, उपन्यास आदि को स्वयं पढ़कर उसके भावों को ग्रहण कर आनन्द का अनुभव कर सकता है। पठन की शुद्धता से सम्भाषण का तरीका आता है जिससे मानव योग्य नागरिक बनकर अपने भावों को देश के अन्य अशिक्षित लोगों तक पहुँचा सकता है।

पठन का सम्प्रत्यय

शिक्षा का व्यावहारिक रूप पठन ही है। किसी भी विषयवस्तु के पाठ का अपना महत्व होता है। पढ़ना एक कला है। पढ़ने में रूचि के अभाव में पठन का परिष्कार होना संभव नहीं है। अतः पठन का परिष्कार करने के लिए आवश्यक है कि पढ़ने में रूचि जागृत की जाए। पठन का परिष्कार होने के पश्चात् विषयवस्तु का आनन्द पठन के माध्यम से लिया जा सकता है। पठन के अभाव में यह आनन्द संभव नहीं है।

प्रो. बी. एन. शर्मा– ने पठन की परिभाषा इस प्रकार दी है– ''कवि या लेखक के लिए लिखित विचारों से तादात्म्य स्थापित करने के लिए जिस साधन का उपयोग किया जाता है, उसे पठन कहते है।''

डॉ. एस. अग्रवाल के अनुसार– ''लिखित भाषा का अर्थ ग्रहण करते हुए पढ़ने की क्रिया को पठन कहते है।''

डॉ. रामशकल पाण्डेय के मतानुसार– ''पठन वह क्रिया है जिसमें प्रतीक, ध्वनि और अर्थ साथ–साथ चलते हैं।''

डॉ. रघुनाथ सफाया का मत है कि– ''पूर्वश्रुत ध्वनियों के प्रतीक लिपिबद्ध शब्दों को पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया को वाचन कहते है।''

किसी भी विषयवस्तु को पढ़ते–पढ़ते ही मानव मन सृजन की ओर अग्रसर होता है। पठन इस सृजन रूचि में नींव का कार्य करता है और भविष्य में उसे और अधिक समृद्ध बनाने के लिए कटिबद्ध रहता है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर उच्च प्राथमिक स्तर (आठवीं कक्षा) के विद्यार्थियों की हिंदी में पठन संबंधी अधिगम आवश्यकताओं का पता लगाने हेतु अधिगम आवश्यकता जाँच प्रश्नावली का निर्माण कर उन्हें कक्षा आठवीं के 60 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया एवं विद्यार्थियों की पठन संबंधी रूचि के आँकड़ों को प्रतिशत के आधार पर विश्लेषित किया गया।

पठन कौशल संबंधी अधिगम आवश्यकताएँ

कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की हिंदी में पठन संबंधी अधिगम आवश्यकताओं का पता लगाने के लिए पठन कौशल के निम्नांकित दो क्षेत्रों का निर्धारण किया गया–

1. पठन विधा आधारित अधिगम आवश्यकताएँ
2. विषयवस्तु आधारित अधिगम आवश्यकताएँ

1. पठन विधा आधारित अधिगम आवश्यकताएँ

पठन विधा पर विद्यार्थियों ने न्यूनाधिक रूप से अधिगम आवश्यकताएँ बताईं। इन्हें बढ़ने से घटते प्रतिशत की ओर व्यवस्थित क्रम में सूचीबद्ध किया गया, जिसे निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है–

तालिका 1: पठन विधा आधारित अधिगम आवश्यकताएँ

क्र.सं.	विधा का नाम	सहमति (%)
	गद्य	
1.	कहानी	96
2.	लघु नाटक	90
3.	यात्रा वृत्तांत	82
4.	निबंध	74
5.	एकांकी	58
6.	संस्मरण	52
7.	जीवनी	52
8.	प्रतिवेदन	36
	पद्य	
1.	कविता	92
2.	दोहा	88
3.	सूक्ति	68

निष्कर्ष

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 90 प्रतिशत से 96 प्रतिशत विद्यार्थी कहानी, लघुनाटक एवं कविता को अपनी पठन अधिगम आवश्यकता मानते हैं। 82 प्रतिशत से 88 प्रतिशत विद्यार्थी यात्रा वृत्तांत एवं दोहा पढ़ना चाहते हैं। 68 प्रतिशत से 74 प्रतिशत विद्यार्थी सूक्ति एवं निबंध पढ़ना चाहते हैं। 52 से 58 प्रतिशत विद्यार्थी जीवनी, संस्मरण एवं एकांकी पढ़ना चाहते हैं। 36 प्रतिशत विद्यार्थी प्रतिवेदन को अपनी पठन आवश्यकता बताते हैं।

2. विषयवस्तु आधारित अधिगम आवश्यकताएँ

हिंदी में पठन संबंधी विषयवस्तु के प्रत्येक क्षेत्र पर विद्यार्थियों ने न्यूनाधिक रूप से अधिगम आवश्यकताएँ बताई, जिसे तालिका संख्या 2 में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका 2: विषयवस्तु आधारित अधिगम आवश्यकताएँ

क्र.सं.	पठन सामग्री विवरण	सहमति (%)
1.	हास्य संबंधी	98
2.	राष्ट्रीय पर्व संबंधी	90
3.	ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी	90
4.	समाचार	88
5.	पर्यावरण संरक्षण संबंधी	84
6.	विज्ञान संबंधी (वैज्ञानिक आविष्कार, वैज्ञानिक)	80
7.	नीति एवं सदाचार संबंधी	76
8.	त्योहार एवं पर्व संबंधी	76
9.	कला संबंधी	76
10.	समाज विज्ञान संबंधी	72
11.	महापुरूषों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व संबंधी	72
12.	संगीत संबंधी	68
13.	संस्कृति संबंधी	66
14.	भूगोल संबंधी	66
15.	अध्यात्म संबंधी	54

निष्कर्ष

उपर्युक्त तालिका से विदित होता है कि 90 से 98 प्रतिशत विद्यार्थी हास्य संबंधी, ऐतिहासिक घटनाओं संबंधी एवं राष्ट्रीय पर्व संबंधी विषयवस्तु पढ़ना चाहते हैं। 80 से 88 प्रतिशत विद्यार्थी विज्ञान संबंधी, पर्यावरण संरक्षण एवं समाचार संबंधी विषयवस्तु को पढ़ना पसंद करते हैं। 76 प्रतिशत विद्यार्थी त्योहार, नीति एवं सदाचार, कला, महापुरूषों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व संबंधी एवं समाज विज्ञान संबंधी विषयवस्तु पढ़ना चाहते हैं। 68 प्रतिशत विद्यार्थी संगीत, संस्कृति एवं भूगोल संबंधी विषयवस्तु को पढ़ना पसंद करते हैं। 54 प्रतिशत विद्यार्थी अध्यात्म संबंधी विषयवस्तु पठन को अपनी अधिगम आवश्यकता बताते हैं।

उपसंहार

प्रस्तुत लेख में भाषा का अर्थ एवं महत्व, पठन का सम्प्रत्यय, पठन कौशल संबंधी अधिगम आवश्यकताएँ एवं विषयवस्तु संबंधी अधिगम आवश्यकताएँ को दर्शाया गया है। साथ ही उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा में पठन कौशल संबंधी अधिगम आवश्यकताओं का विश्लेषण करते हुए व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

संदर्भ

1. पाण्डेय, लक्ष्मी नारायण (1988), भाषा विज्ञान, कानपुर : कैक्सटन प्रेस।
2. पाण्डेय, डॉ. राम शकल (2010) हिन्दी शिक्षण, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
3. रायजादा, डॉ. बी.एस., वर्मा, डॉ. वन्दना (2008) ''शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. शर्मा, डॉ. आर. ए. (2011) ''शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. तिवारी, भोलानाथ (1994), भाषा विज्ञान, पटना : महल एजेन्सीज।
6. व्यास, डॉ. भगवती लाल, डॉ. वेद प्रकाश (2007) हिन्दी शिक्षण के नये आयाम, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा।